REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

पालनपुर राज्य

डा. मयंक टी. बारोट
आसी.प्रोफसर, श्री बी.डी.अेस. आर्टस, सायन्स एन्ड कोमर्स कोलेज, पाटण.

❊ सारांश :

दी का लक्ष्य सागर होता है लेकिन यह बनास का लक्ष्य सागर नहीं। बनास तो रण के बीच में रास्ता रखकर खडी है। उडते रण की प्रवाहो के छाती पर झील लेने सेंकडो वर्षो से रण में गुलाब खीलने की कश्मकश गुलाब भले हि खिला हो लेकिन रण अभी पूरे कांठे में फोरा नहीं। बनास यह धरती में वही यानी यहाँ ऐसे प्रदेशो को उसके नाम पर देकर उसके स्तत्व में ही सबकी जात को पीसकर उसका ही नाम धारण कर लिया। रण, रेती के वंटोल, पहाडो के नक्कर पथ्थर है। बनास नाम की भूमि में इतिहास उसकी प्राकृतिक रचना उसकी संस्कृति उसके समाज उसके देवस्थान और दरगाह, उद्योगपति और सबसे ज्यादा तो नदी, नामधारी प्रदेश में से पूरे भारत में और विदेश में फला हुआ अपना नाम कर गये यह भूमि के इन्सान सब मिलकर बनास है।

❊ पालनपुर का प्राचीन उल्लेख :

पालनपुर राज्य का इतिहास भव्य और पुराणा है। महाभारत काल की बहोत निशानीयाँ यह जिले में उपलब्ध है। यहाँ अंबाजी आबु, चंद्रावती आदि प्राचीन समय से खूब प्रसिद्ध है। आज की यह बनास नदी का नाम पुराणो में पयस्विनी था। उसमें से पर्णाशा और आखिर में बनास के नाम से पहचानने लगी। एक समय में यह उत्तर गुजरात के पूरे प्रदेश 'आनर्त' के नाम से पहचाना जाता था।

बनास नामक प्रदेश में पहला दरिया था। विविध भूरचनाओ द्वारा परिवर्तन पामे हुए आज के भू-भाग अस्तित्व में आया है। प्राग ऐतिहासिक काल के दरियाइ प्राणीओके दुर्लभ, अश्मि मिले है जो बताते है कि पंदर करोड वर्ष पहले इस विस्तार में पहले जीव का आरंभ हुआ होगा। ऋग्वेद के मुताबिक गंगा, यमुना, सरस्वती नदी इस विस्तार में होकर समुद्र में पडती थी। भुस्तरीय हिलचाल के कारण यह विस्तार उपर आया। इ.स. पहले २४०० में हडप्पा संस्कृति जब चरनसीमा पर थी तब इस विस्तार में कुछ बंदरो द्वारा देश विदेश में व्यापार चलता था। अणहिलवाड की स्थापना के बाद गुर्जर, गुर्जरात, गुजरात नाम पडा। इस गुजरात के तीन भाग आनर्त, सौराष्ट्र और लाट आनर्त यानी आज के उत्तर गुजरात के प्रदेश बनासकांठा का समावेश आनर्त प्रदेश में होता है।

❊ उदभव :

इस प्रकरण में गुजरात की उत्तर दिशा में आया हुआ पहले के पालनपुर राज्य का इतिहास दिया है। अभी के बनासकांठा जिले में आया हुआ मुख्य मथक पालनपुर पहले का स्थानिक देशी राज्य था। पालनपुर राज्य में इ.स.१९५५ में एम.एस.युनिवर्सिटी, बरोडा के पुरातत्व विभाग के डॉ.अेस.अेन.चौधरी के मार्गदर्शन तले पुरातत्वीय उत्खनन करते प्रागैतिहासिक कालीन अवेशष मिले नहीं लेकिन नवपाषणकालिन और लघुपाषणकालिन अवशेषो जैसे कि हाथकुहाडी, छोलणीया, पतरीआ, रघा आदि अमीरगढ, बालुन्द्रा रामपुरा और सरोडा जैसे स्थलो से मिले है। आत्म नवपोषण ओर लघुपोषण युगमें हुआ है।

इस विस्तार के प्राचीन समुदाय का इतिहास खास जानने को नहीं मिलता लेकिन अनुमान कर शकते है। गुजरात के अन्य प्रांतो में जो राजवशोने शासन किया होगा उनका शासन इस विस्तार में भी होगा।

❊ प्राचीन पालनपुर का इतिहास :

प्राचोन पालनपुर का इतिहास के बारे में नीचे दी गई माहिती प्राप्त हुई है।

(१) मौर्यकाल (इ.स.पू.३२२ से इ.स.पू.१८५) :

मौर्यकालीन अभिलेषिक साधन गुर्जर देश में से मिले है। यहाँ चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक संप्रति आदि २०० साल तक शासन किया था। इसीलिए अशोक के गिरनार शिलालेख उस बाबतों का पूरावा पूरा करता है। मौर्य सम्राट रुद्रदामन, स्कंदगुप्त आदि गुर्जर देश पे राज किया था और नंदो को मार कर चंद्रगुप्त मौर्य पूरे भारत पर आधिपत्य प्राप्त कर लिया था। इसीलिए अर्बुदाचाल के प्रदेश भी मौर्यो की सत्ता तले थे। यह विस्तार भी उनके साम्राज्य का भाग होगा। उसके बाद इन्डोग्रीक राजाओ के शासन तले आया होगा। मिनेन्डर और अेपोलोडोटस राजाओ के समय के सिक्को का गुजरात में लंबे समय तक देखने को मिलता व्यापक चलण इस बात का अनुभोदन देता है।

(२) मालवो (इ.स.पू.१८५ से २२०) :

अर्बुदाचल प्रांत पर से मौर्यो की सत्ता कम हो गई। उसके बाद यह प्रदेश मालवो के हाथ में आया। मालवो यह पर्वतो पर रहती आदिवासो जननी प्रजा थी। अर्बुदाचल प्रदेश के नजदीक आया हुआ श्रीमाल या भीलमाल नगर का नाम उनके नाम पर से पडा है। भीलभाल भील्लम आखिर भीनमाल नाम प्रसिद्ध हुआ है। आज भी सबसे बडा नगर विद्यमान है।

(३) क्षेत्रपकाल (इ.स.पू.२३ से इ.स.पू.४००) :

इ.स.२३ से ४०० तक शासक किया था। यानि की ३०० साल से भी ज्यादा समय शासन किया था। क्षत्रप वंश के पहले राजा भूमक था उन्होंने गुजरात पर इ.स.२३ से ३२ साल तक राज किया। ऐसा उनके अखिलेखो पर से जान सकते है। गाहपान राजन क्षत्रप वंश का था उन्होंने कर्दमवंश की स्थापना पहले अथवा शक संवत ११ (इ.स.पू.९०-८९) पहले शासन किया था। उनके समय के अखिलेभो में निर्देशित इ.स.पू.४६ से ४१ साल उनके शासन साल के नाम से पहचाना जाता है। उनके जमाइ ऋषभदत्त ने बनास नदी काँठे घाट बांध कर सुवर्णदान किया था। नाहपान का राज उत्तर में राजस्थानके अजमेर नजदोक आया हुआ पुष्कर से दक्षिण में नासिक तक फला हुआ था। उनके आधार पर जान शकते है कि चंबल के बनास के नाम से जानी जाती उपनदी या तो इस राज्य में बहती बनास नामधारी मूल नदी के आधार पर (यह राज्य पिछे से जिल्ले का नाम बनासकांठा रखा गया) पुराणो में इस नदी की वर्णशा या पर्णशा के नाम से उल्लेख किया है। बार्णशा चंबल को मिलती अर्वाचीन बनास संभव है। पुरातत्वविद श्री भगवानलालजी इन्द्रजी पालनपुर नजदीक से बनास नाम है। जबकि बार्णशा का उल्लेख पालनपुर नजदीक बहती बनास के संदर्भ में हो सकता है।

(४) गुप्तकाल (इ.स.४०१ से ४७०) :

विक्रमा के पांचवे सैके में चंद्रगुप्त (विक्रमादित्य) २ नो क्षत्रया को हराकर पश्चिमी हिन्द के बडा हिस्सा कब्जे कर लिया था। श्री अशोक के गिरनार शिलालेख पर आखिरि गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त के लेख है। इ.स.४५५ से ४६७ लेख के अनुसार उनका शासन उत्तर गुजरात और मालवा तक था यानि यह भी गुप्त साम्राज्य का हिस्सा होना चाहिए। स्कंदगुप्त के अवसान के बाद (इ.स.४६७) गुप्त साम्राज्य का शासन कम हो गया यानि यह पालनपुर प्रांत भी (अभी का बनासकांठा) गुप्त राजाओ के ताबे तले था।

(५) मैत्रककाल :

इ.स.४७० में मैत्रकवंशी राजा भट्टार्क गुप्त साम्राज्य के अंत समय परिस्थित का लाभ लेकर वलभी पर सत्ता स्थापी थी। पूरे गुजरात के प्रदेश और मालवा तक मैत्रक शासकोने आशरे ३०० साल तक शासन किया। यह राजाओ के प्राप्त हुए ताम्रपत्रो में से इस प्रदेश के कोइ भी स्थल का उल्लेख नहीं। फिर भी पालनपुर राज्य का यह विस्तार मैत्रक शासको की सत्ता तले होगा क्युंकि मैत्रक वंश की सत्ता गुजरात और पश्चिमी मालवा तक फलाई थी।

प्राचीन काल में पालनपुर राज्य का प्रदेश गुजरात और राजस्थान दोनो राज्यो की सरहद पर आया हुआ होने से दोनो शासक पक्षो के तले बार-बार आता था। फिर भी चंद्रावती यानि की 'अर्बुद मंडल' के शासको के तले लंबे समय रहा था। ऐसा पूरावाओ के आधार से कह शकत है।

❊ संदर्भ सूचि :

१. सोढा भवरसिंह बी., ''बनासकांठा जिल्ला के सोढा ज्ञाति का इतिहास'', एक ऐतिहासिक अध्ययन लघुशोध निबंध, हेम. उ.गु.युनिवर्सिटो, पाटण, साल : २००७

२. परीख आर. टी., ''आर्कोलोजी ओफ बनासकांठा'', बरोडा, १९७८

३. शास्त्री हरिप्रसाद जी., ''गुजरात का प्राचीन इतिहास'', अहमदाबाद, इ.स.१९६४

४. पटेल सुजाभाई के., ''मोघलकालिन पालनपुर'', एक ऐतिहासिक अध्ययन-पाटण, २०११-१२

५. जमीनदार रसेश चतुरभाइ, 'क्षत्रपकालुं गुजरात', अहमदाबाद, इ.स.१९७५

६. Imperial Gazetter of India, Provincial Seriec Bombay Presidency, Year 2011-12 Calcutta A.D. 1909

७. ओझा गौरीशंकर हिराचंद, ''शिरोही राज्य का इतिहास'', जोधपुर, इ.स.१९३६

८. नवाबझादा तालेमहंमदखान, ''पालनपुर राज्य का इतिहास'', भाग-१, वडोदरा, इ.स.१९१६

डा. मयंक टी. बारोट
आसी.प्रोफसर, श्री बी.डो.अेस. आर्टस, सायन्स एन्ड कोमर्स कोलेज, पाटण.

LBP PUBLICATION